स्वतंत्रता दिवस के समारोह के अवसर
पर दिया गया भाषण ।

दिनांक:- 15-8-61

बहनो और भाइयों और बच्चों,

आज आजाद हिन्द की 24 वी सालगिरह है, वर्षगांठ है । तो यह दिन, यह शुभ दिन आपको और हमको, सब को मुबारिक हो, आज के दिन बहुत सारे विचार आते हैं, हमें सब से पहले तो हमें सोचना है उनका जिन्होंने हमारे हिन्दुस्तान के आजाद करने के लिए हमें रास्ता दिखाया, गांधी जी का, उनका विचार करना है । और खाली उनका नहीं बल्कि जो बातें उन्होंने हमें सिखायी और जिस रास्ते पर चलने का उन्होंने बताया। क्योंकि अगर हम उस रास्ते से हटें तो फिर हम बहक जायेगें और जब जब हम हटें हैं हम बहक गयेहैं । उनका विचार करना है और उन लोगों का, शहीदों का और लाखों और शायद करोड़ो आदमियों का जिन्होंने इस आजादी के लाने में बाज ने जान दी और बहुतो ने बेहद परेशानी उठाई, परिश्रम किया । पहले उनका याद करना चाहिए, फिर जरा इस 14 बरस के जमाने को देखना है हमें । क्या हमने किया कहां तकपहुंचे हैं और क्या हम करना चाहते थे नहीं किया, कहां तक हम आगे बढ़े हैं । कहां पर रूक गये हैं, क्या हमें करना है ?. क्योंकि हम पिछले जमाने को सोचें वो ठीकहै क्योंकि पिछला जमाना हमाराहै उससे हम सीखते हैं और सीखा है लेकिन आखिर हमारी आंखें आगे होनी है, भविष्य की तरफ, क्योंकि उस

भविष्य को आपको और हमको और हिन्दुस्तान के करोड़ो आदमियों को बनाना है । हमको, यह किस्मत का खेल नहीं है । हमें अपनी किस्मत खुद बनानी है, अपने काम से अपने परिश्रम से । इसलिए भविष्य का सोचना है । इस पिछले जमाने में बड़े बड़े समुद्र पार किये हिन्दुस्तान के लोगों ने, लेकिन आगे और भी समुद्र हैं और जो मंजिल , जिस मंजिल की तरफ हम देखते हैं काफी दूर है । फिरभी इस जमाने को देख के पिछले हमारी हिम्मत बढ़ती है, ताकत आती है, बहुत कुछ हमने किया । कई पड़ाव पार किये हमने किया । (कई पंचवर्षीय योजनायें आयी एक एक योजना एक कौम का हमारा कदम हो गया,) दो बड़े कदम उठे पूरे हुये तीसरे के शुरू में हैं हमें उम्मीद है इस तीसरे के खत्म होने पर सारा हिन्दुस्तान आगे बढ़ेगा काफी और उसकी ताकत अपनी रक्षा करने की और अपनी खुशहाली लाने की बहुत बढ़ जायेगी, रक्षा करना मैंने कहा । क्योंकि हर कौम का पहला काम होता है । अपनी आजादी की रक्षा करना, हिफाजत करना । बदकिस्मती से हमारे सामने भी खतरे आते हैं, आये हैं हमारी सरहदों पर, सीमाओं पर । तो हमें हमेशा तैयार रहना है उनको अपने देश की हिफाजत करनी है ।

अभी कल ही एक छोटी सी बात हुई यहां की हमारी लोकसभा में और एक छोटा सा टुकड़ा भारत का कुछ गांव/जो की कि भारत से अलग हो गये थे एक जमाने से हालांकि यहां थे वो जाकते से भारतमें मिल गये हैं, दादरा और नगरहवेली छोटा सा टुकड़ा एक महान देश का लेकिन छोटे से छोटा टुकड़ा एक महान देश का हमारा

प्यारा है, और हमारे दिल में रहता है । इसलिए इस छोटे से टुकड़े के वापिस आने से हमें खुशी हुई और महज उसके आने से खुशी नहीं हुई बल्कि उससे यह विचार हुये जो कि और कुछ टुकड़े बाकी है, इधर उधर उनको भी वापिस लाना है और घर में बसाना है । हमारी कोई अच्छा नहीं, हमारी नीति नहीं कि हम और देशों पर हमला करें और देश के जमीन पर कब्जा करें और देश के रहने वालों को अपने देश में मिलाये हम नहीं चाहते यहपुराने ख्याल आजकल । हम न किसी और देश पर कोई हमला किया चाहते हैं, न कोई दखल किया चाहते हैं, न अपने देश में किसी के हमले को गवारा कर सकते हैं, ये पुराने जमाने की बातें हैं हमला करना इधर उधर पुराना जमींदारी जमाना, नवाबों का जमाना, राजाओं का जमाना जो कि राज को अपनी जमींदारी समझते थे, बढ़ाते थे , घटाते थे । वो जमाना अब नहीं रहा । नया जमाना आया है अब अपने अपनेघर में रहें और अपने अपने देश में रहें, लोग और औरों से सहयोग करें और देशों से घटाने बढ़ाने का सीमाओं का जमाना नहीं है । और अगर कोई यह करता है तो आजकल के जमाने मे वो किसी पुराने जमाने काशख्स है और आजकल का जमाना आप देखिये कैसा है ? हमारे इस पृथ्वी से हवाई जहाज पृथ्वी जोड़ के तारों की तरफ देखते हैं और जाते हैं और जा रहेहैं, ऐसे मौके पर कहां हमारी और आपकी हमारी और छोटी छोटी सीमायें और कंहा हमारे आपस के छोटे छोटे झगड़े एक दूसरी दुनियां की सीमा पर हैं दूसरे युग के, दूसरे जमाने के और उसके लिए हमें तैयार होनाहै । एक तरफ से यह

बात है और हम हो रहे हैं तैयार और हमारे यहां काफी लोग हैं, हमारे नौजवानों में जो कि इस नयी दुनियां के लिएतैयार हो रहे हैं । और इस नयी दुनियां के बनाने की कोशिशें भी कर रहे हैं । यह मुबारिक बाद बात है । हमारे लिए लेकिन आज के दिन मैं खासतौर से मैं यह नहीं चाहता हूं हम कुछलेखी करें कि क्याक्या किया इन चौदह बरसों में ? हालांकि बहुत बातें की जिससे हमें अभिमान होता है अपने देश की तरफ लेकिन यह ज्यादा अच्छा है आज के दिन हम कुछ अपनी कमजोरियों की तरफ ध्यान दें ।

आज आपने शायद पढ़ा हो हमारे उपराष्ट्रपति जी का संदेशा, समाचारपत्रों में छपा और उन्होंने विशेषकर ध्यान दिलाया है इस पर कि हमारे लोगों में नियम होना चाहिए डिसिप्लन होना चाहिए और बातें भी बहुत चाहिए लेकिन डिसिप्लन के अटल हैं । डिसिप्लिन किस का, हमारा एक फौजों का डिसि-प्लन है जिससे हमारी फौजें अच्छी हैं, बहादुर हैं, माकूल हैं और उनपर हम भरोसा करते हैं । लेकिन डिसिप्लिन खाली फौज का नहीं बल्कि सारे करोड़ो आदमी काहोना चाहिए । क्योंकि हमें इस भारत को जिसके इतने अनेक रूप हैं जिसके इतने अनेक रूप हैं । जिसके कितने अलग अलग बड़े बड़े प्रान्त हैं, सूबे हैं भाषायें हैं, बड़े बड़े मजहब हैं इसमें सब कुछ अनेकता है, फिरभी जो उसके पीछे एक एकता है उसको एक मजबूत करनाहै, एक परिवार है । हमें याद रखनाहै कि जो जो पुरुष यास्त्री कोई भी बात करता है जिससे हमारी एकता में चोट लगे, कमजोरी आये

वो भारत को हानि पहुँचाता है वो सेवा नहीं करता हमें अपने पड़ौसी को अपने दूसरे धर्म के पड़ौसी को या और जो भी कोई हो हमारे अपने देश को रहने वाला उसको अपनाना है दुख की बात यह है कि हम इस सबक को भूल जाते हैं कभी प्रान्तीयता में पड़ते हैं, कभी साम्प्रदायिकता में, कभी जातिभेद में, कभी भाषा के ऊपर लड़ते हैं । ये सब बातें हैं जिन पर हम सोचें, विचार करें, बहस करें, निश्चय करें । लेकिन जहां कोई ऐसी बात की जिससे फूट होती है आपस में, जिसमें रंजिश हो, जिसमें दीवारें खड़ी हों वो बुरी बातें है । और जो हमारे सामने रास्ता है जबर्दस्त रास्ता जिस पर हम तेजी से चल रहे हैं । वो रास्ता, उस रास्ते में अटकाव पड़ जाते हैं, रुकावटें होती हैं और कौमें नहीं बढ़ सकती याद रखिये काम हमने क्या उठाया, एक जबर्दस्त काम जितना बड़ा काम दुनियां में कोई कौम भी शायद ही उठा सके, उससे बड़ा काम 43 करोड़ आदमियों का आगे बढ़ाना, आगे बढ़ना कैसे किसी खास बात में नहीं बहुत सारी बातें हैं, और बढ़ना आखिर में एक युग से उनको निकाल के दूसरे युग में ले आना एक पुराने जमाने के विचारों से, पुराने जमाने के रहन सहन के तरीकों से, पुराने जमाने की गरीबी से निकाल के उनको एक नये जमाने में लाना, खुशहाल जमाने में और जिसमें कि आजकल के जमाने की बातें हम समझें काबू में लाये और उससे अपने मुल्क को बढ़ाये उससे । सारे मुल्क की खुशहाली , खाली खुशहाली नहीं बल्कि उसके पीछे जो बातें होती हैं, जो दिमाग को ऊंचा करती हैं । जो हमारे रूहानियत के ऊंचा करती हैं । क्योंकि

वाली एक, एक आरामतलबी से कौमें नहीं बढ़ती है, आपको और मुल्कों को रहने वाले को इस पिछले 14 बरस में काफी दिक्कते हुई हैं। हम बढ़े हैं, आराम भी आया काफी दिक्कतें भी उठानी पड़ी और यकीनन काफी दिक्कतें होगीं और एक तरह से मैं आपको मुबारिकबाद दूंगा उन दिक्कतों को, उन कठिनाईयों को जो हमारे सामने हैं। क्योंकि अगर दिक्कत और कठिनाई न हो आरामतलबी ज्यादा किसी कौम में आ जाये, तो कौम कमजोर हो जाती है। जैसे अमीर आदमियों के बच्चे निकम्मे और कमजोर हो जाते हैं। हमें इस किस्म का निकम्मापन नहीं चाहिए। [तालियां] [हमें तगड़ी कौम चाहिए दिलेर कौम चाहिए और ऐसी कौम जो एक दूसरे को मिल के रहती हैं भाई बहन एक दूसरे को समझते हैं,] हिन्दुस्तान को आप देखिये इस वक्त अजीब तस्वीर एक तरह से तस्वीर है बड़े बड़े काम हो रहे हैं, जिससे भारत का सिर उठता है, बहुत ज्यादा पहले से कही ज्यादा करोडो बच्चे स्कूल जाते हैं और नयी दुनियां का हाल सीखते हैं लाखों लोग कालेजेज में हैं। वे तैयार हो रहे हैं आइंदा भारत की सेवा करने के लिए और दुनियां की सेवा करने के लिए। और उसी के साथ हम देखते हैं आपस के झगड़े छोटी छोटी बातों पर बहस और दिल में द्वेष और रंजिश होना।

विशेषकर आपका और मेरा ध्यान इस समय पंजाब की तरफ है जहां के लोग बहादुर लोग हैं, जहां के लोगों ने एक हिन्दुस्तान की खिदमत काफी की है, पुराने जमाने में और हमारीआजादी की लडाई में भी और यकीनन

आइंदा भी करेगें । लेकिन बदकिस्मती से उनकी हिम्मत और बहादुरी कितने लोगउनके हमारी फौज में हैं और मशहूर हो गये हैं हमारी फौजों में लेकिन मुश्किल ये है कभी आपस में मन मुटाव, आपस में रंजिशें में चली जाती है । और इससे बहुत कुछ उनकी ताकत जाया हो जातीहै । और अभी हिन्दुस्तान के और हिस्सों में भी ऐसी बातें हुई और इसलिए हमारे लिए भी इस वक्त पहला सवाल है, सवाल बहुत हैं, पंचवर्षीय योजना के लिए सड़क खुली है, जिस पर हमें चलना हैं और काम करके चलनाहै हाथ में हाथ मिला के, पैर मिला के चलना है देश के करोड़ों आदमियों को, वो तो है ही हमारा पहला सवाल, लेकिन इसमेंसमय उससे भी ज्यादा हमारा मजबूत औरजरूरी सवाल हो गया है कि हम हिन्दुस्तान में रह इस किस्म की एकता पैदा करें, एक दिल की एक एक रूहानी एकता जिसमें जो असल में कौम में होनी चाहिए जिसको एक इंटेग्रेशन एक जजबात की एक इंटेग्रेशन हम कहतेहैं और अभी यहां हिन्दुस्तान में हमारे अलग अलग तूबों से लोग आये थे इस पर विचार करने, विचार किया और कुछ बातें तय की हैं । लेकिन वो तो एक कदम हैं । यह तो बात/हमें पकड़ना है । उठाना है और अम्बल रखनी है, हमें, क्योंकि क्या हो जायेगा ? हमारी तरक्की और बड़े बड़े कारखाने हम खड़े करें और तरह से हम पैसा भी कमायें और क्याफायदा उससे ? अगर हम आपस में लड़ते है और छिकम्मे हो जाते हैं, या प्रेम से न मिलकर काम कर सकते हैं, चल सकते हैं, तो यह बुनियादी बात है । इसलिए मुझे रंज है कि हिन्दुस्तान में कहीं कहीं

ऐसी बातें होती हैं और इस वक्त पंजाब में भी इसका चर्चा है, और बहुत सारे लोग परेशान हैं पंजाब में कि क्या वहां होने वाला है ? मैं समझता हूं और मुझे आशा है कि कोई बुरी बात नहीं होगी, और लोग समझेंगे क्योंकिपंजाबी लोग जोशीले हैं जजबात के हैं लेकिन आखिर में समझते हैं समझ जाते हैं और यकीनन वो समझेंगे और यह जो एक हमारे दिमागों के सामने एक धुआं सा आ गया है जिसने हम सीधा देख नहीं सकते, उसको हटायेंगे, और ताजी ताजी हवा में और रोशनी में और उन सवालों को देखेंगे कोई सवाल मुल्क का नहीं है, नहीं होना चाहिए जिससे लड़ाई झगड़े से हम हल करें । कोई सवाल नहीं होना चाहिए जिसके लिए हम भूखहड़ताल वगैरह करें । यह तरीके नहीं हैं एक जमुहरियत के, एक प्रजातंत्रवाद के सवालों के हल करने के लिए तरीके नहीं हैं । क्योंकि उन तरीकों में हम पड़ें तो फिर हरेक अलग अलग कर सकता है । किस की बातमाने, किस की नहीं कुछ इधर करें, कुछ उधर करें और सारे समाज में एक गड़बड़ी पैदा हो, समाज का संगठन हमें करनाहै और हमारी समाज हिन्दू समाज नहीं है, मुस्लिम समाज नहीं, सिख समाज नहीं या कोई और समाज हमारी समाज हिनदुस्तान समाज है, भारतीय समाज है जिसमें सब लोग हैं ।तालियां। इसलिए, इसलिए पहला प्रश्न, पहला सवाल हमारे सामने हैं, अपनाने का, एक दूसरे को अपनाने को । उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम, अलग अलग धर्म हैं, सब धर्म जो हैं हिन्दुस्तान के बहुत सारे उनमें हमारे देश के पैदा हुये हैं, कुछ उनमें से बाहर

आये हुये हैं । लेकिन जो लोग कोई यहां है हिन्दुस्तान में वो भारत का धर्म हैं, मजहब है और उसकी इज्जत करनी है, और आज की बात नहीं है हजारों बरस से यहप्रथा रही, यहएक हिन्दुस्तान की कहानी रही है कि हम एक दूसरे का आदर करें, इज्जत करें, उनके धर्म का, उनके रहन सहन के तरीकों का । हम झगड़ा न करें । अशोक के जमाने का है पत्थरों पर लिखा हुआ है अब तक क्या इस दो हजार बरस में हम इतने पिछड़ गये कि हम भूल जायें उसको और छोटी छोटी बातों पर झगड़ा करें कभी भाषा पर कभी धर्म के नाम से कभी जाति के नाम से । जाति भेद, जातिभेदऔर इस तरह से भेद किसी प्रजातंत्र में जमूहरियत में नहीं रह सकते । हमें जातिभेद को खत्म करना है जिसने हमारी समाज के टुकड़े किये हमें और भेदो को खत्म करना है । अपने अपने धर्म पर लोग रहे ठीक है लेकिन अपने धर्म पर रहने के माने नहीं हैं कि दूसरे सेअदावत करें, दूसरे से लड़े और देश को दुर्बल करे । इसलिए अपने अपने धर्म पर रहे के हमें याद रखना है कि हमारा एक बड़ा धर्म है सभों का और वो एक भारत का धर्म हिन्दुस्तान का धर्म मिल के रहना, मिल कर काम करना और मिल कर आगे बढ़ना और जो चीज उसके रास्ते में आती हैं । वो गलत धर्म है चाहे उसको कोई नाम पर दीजिए हिन्दुओं का या इस्लाम या सिखों का या ईसाईयों का सब हमारे देश के हैं । वो धर्म, वो धर्म जो लोग हैं वो लोग जो हैं । बराबर से हमें देखना है और रखना है और

ने हमें देखना है और रखनाहै और बराबर आगे बढाना है । किस तरह से आप इन बातों को आपस में झगड़े के करेंगें आजकल के जमाने में । मैंने आपको बताया आज कल का जमाना है ।तारों की तरफ देखने का और तारों की तरफ देखने का और तारों की तरफ इंसानका जाने का मालूम नही कब तारों पर लोग पहुंचे जमाना आता है, और जायेगें हमारे ये नौजवान भी जायेगें और अपनी जान पर खेलेगें । जोलोग जान पर खेलते हैं वही जरा कौम को बढ़ाते हैं । महज बैठे बैठे थैलियों में पैसा निकाले ने से एक कौम नहीं बढ़ती । हां पैसे कीभी जरूरत होती है वक्त पर लेकिन पैसा इंसान पैदाकरता है, इंसान पैसापैदाकरता है । पैसा इंसान नहीं पैदा करता है । इंसानों की हमें जरूरत हैं, और इंसानियत की जरूरत है इस मुल्क में, जिसमें सब लोग अपने सामने इंसानियत की बात रखें ।

दूसरी बात देखें आप जरा दुनियां की तरफ आजकल के जमाने को कैसे कभी कभी लड़ाई के ढोल सुनाई देने लगते हैं लड़ाई की तैयारी, लड़ाई के हत्थियार जो दुनियां को तबाह कर दें, एक दफा अगर आप उन्हें बोल दें तो ऐसे हथियार हैं और रोज ब रोज बढ़ते जाते हैं और फिर भी अभी तक दुनियां के जो बुजुर्ग हैं, उनमें दानिशमंदी इतनी नहीं आयी कि वो समझौते करें और इन हथियारों को बिल्कुल बन्द कर दें और खत्म कर दें । क्योंकि यह एक साबित बात है कि आजकल के जो बड़े हथियारनहीं उससे कोई दुनियां का सवाल हल नहीं होते खाली दुनियां तबाह होती है उससे कोई जीत

किसी को नहीं होती, जीत क्याकब्रिस्तान दुनियां का हो गया, जीत तो नहीं हुई, तो फिर यह हालत दुनियां की है। और दुनियां को हम क्यासम्भालें, हमें अपने को सम्भालना है। और ऐसी हालत में जब दुनियां के सामने ये उतरे हैं, हम क्या करें? जाहिर हैहम अपने रास्ते पर रहें, जाहिर है कि हम कोशिश करें जहां हो सकता है कुछ अपने आवाज से, अपनी खिदमत से औरसेवा से दुनियां को लड़ाई से रोके लेकिन दुनियां को जब कुछ हमाराअसर हो, जब हम अपने घर में एक ऐसी हवा पैदा करें। ऐसी फिजा पैदा करें, अगर हम अपने घर में अपनेघरेलू झगड़ों पर लड़ते हैं, झगड़ते हैं फिजा खराब करते हैं, हवा गन्दी करते हैं, तो हम अपनी क्या खिदमत करेंगे, और दुनियां की क्या खिदमत करेगें? इसलिए आपके और और इस समय आपके जरिये से हिन्दुस्तान के लोगों से मेरी यह प्रार्थना है, दरखास्त है कि वो आजकल के जमाने को समझें आजकल के हिन्दुस्तान को समझें। क्योंकि हिन्दुस्तान एक नया हिन्दुस्तान हैऔर एक दुनियां की तरफ कदम उठा रहा है, नये सीमायेंहैं जिनको हमें पार करनी हैं। पुराने झगड़े पुरानी बातें नहीं तय हो सकती है इस तरह से। असल बात, असल फर्क जो हैं आजकल जो हिन्दुस्तान में है। वोलोगों के दिमागोंका किस तरफ देखते हैं एकपुराने गड्ढे में हम पड़े या उससे निकल के मैदान में आये और मैदान में आके फिरपहाड़ो के ऊपर चढ़े चोटियों पर इंसानियत की, यह सवाल है आजकल के जमाने में हम रहे या एक पुराने जमाने में पड़े रहे असली सवाल हिन्दुस्तान

के सामने यह है कि और यहपंचवर्षीय योजना वगैरह इसके हिस्से हैं तो इसको आप भी समझें और देखें इस रास्ते पर कैसेयह हल हो सकता है । कौन हमें चला सकता है । इस रास्ते पर ? अगर हमारे यहां हमें फंसे रहे अपने झगड़ों में चाहे कोई भी झगड़ा हो । चाहे चुनाव आने वाला है उसके झगड़े में हम पड़ जाये । चुनाव आते हैं औरजाते हैं लेकिन कौम चलती जाती है । और कौम उसूल चलते जाते हैं, उसके सिद्धान्त अगर कौम नहीं सीखा ठीक तौरसे चलना, अपनाना एक दूसरे को और मिल के चलना औरझगड़ते रहे और आप चुनाव में क्याकर देंगें, कोई जीत जाये, कोई हारे जाये, मुल्क हारेगा । हमारे सामने सवाल एक दल की जीत और हार के नही है, बल्कि एक कौम की जीत की, है एक मुल्क की जीत का है । हिन्दुस्तान की जीत का सवाल है । इसलिए इस ढंग से मैं आपसे कहता हूं आपसे दरखास्त की आप देखें, और हिन्दुस्तान भर के लोगों से मेरी यही दरखास्त है और विशेषकर पंजाब के लोगों से, बुजुर्गों से, सिखों से बुजुर्गों हों, हिन्दुओं के हों औरभी हो जो जो लोग हों वह उनसे इस ढंग से देखें । और एक तंगख्याली से नहींऔर महज एक जजबात में बहक के नहीं गलत जजबात में बहक के नहीं । क्योंकि याद रखिये एक अच्छी बात भी बुरी होजाती है, अगर बुरे रास्ते पर चल के हमने कोशिश की लेने की ।

गांधी जी का एक बड़ा सबक यह था कि कोई अच्छा काम भी हम नहीं कर सकते अगर बुरे

रास्ते पर जाना है तो काम बुरा हो जाता है इस तरह से हम करें । इसलिए मैं उम्मीद करता हूं कि इस जमाने में जो कितारीखी जमाना है हिन्दुस्तान के सामने और आपको हमको मुबारिक हो आजकल हिन्दुस्तान में जिन्दा रहने का । ऐसे तारीखी जमाने में जब तारीखी को लिखें/कि पिछले जमाने में लिखी जैसे कि जाहिर है जिसके लिखने से हिन्दुस्तान आजाद हुआ वो और ज्यादा बड़े सवालों के हल करने में हम करें यह तो जमानाहै । ऐसे वक्त में कहां हम छोटी बातें में पड़ के बह जाये और उसको भूल जायें । और छोटी बातें भी इस तरह से हल नहीं होती कोई सवाल बड़ा सवाल नहीं हल होता रंजिश की तरफ झगड़े के रास्ते पर चल के । ये हमेरी दरखास्त है इस रास्ते को हम जोड़े हिन्दुस्तान भर के लोग । और यह जो नयी दुनियां जा रही है । नये अफताब जो निकल रहा है नयी दुनियां का उसकी तरफ देखें और उसकी तरफ चले और मुल्क भर को ले जाये । क्योंकि आज नहीं एक जमाना हुआ पचास बरस से ऊपर जब कि मैंने औरआपके बुजुर्गों उन्होंनेनये ख्वाब देखें एक नये हिन्दुस्तान की आजाद हिन्दुस्तान के वो हमारे ख्वाब पूरे हुये कुछ बहुत कुअपूरे हुये और बहुत कम ऐसा मिलता है कि स्वप्न हमारे ख्वाब पूरे हुये लेकिन हुये उनको देख के और खुशी हुई लेकिन उस ख्वाब के पूरे होते ही हमने देखा और कि अभी मंजिल पूरी नहीं हुई, बहुत बातें करनी है । तब में हमारे कौम जो हिन्दुस्तान एक जबर्दस्त फैली हुई हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक वो एक हो उसमें एकता हो, उसमें ऊंचाई हो, बड़े दिल की हो,

बड़े दिमाग की हो और आपस में सहयोग जाने और खुशहाल लोग बनें । उसकी हम कोशिश करते हैं छोटा काम नहीं है 43 करोड़ आदमियों को उठाना और उनका खुद उठना अपनी शक्ति से और पुरानी जो कमजोरियां हैं उनको फेंकना, और ऊंच नीच जात की कमजोरियों को फेंकना । उन सबको बराबर का मौका दिया चाहते हैं बढ़ने का और यह जो हमारे रंगोरेशे में मजहब है अच्छी बातें हैं, अगर अच्छी तरफ ले जाये । लेकिन अगर वो मजहब हमें लड़ाते हैं एक दूसरे से विकारत दिखाता है तो मजहब बुरा है ऐसा मजहब, मजहब नहीं है बुरा है वो कोई और चीज है । इस तरह से हमें रखना है अपने धर्म को । और जो चीज हमें अलग करती है, उसको छोड़ना है एक मैं आपको बताऊं तरीका नापतोल करने का जो काम करना चाहे सोचे कि इससे चीज जुड़ती हैं और या टूटती हैं तो अच्छा अन्दाजा है । गज नापने का । अगर जुड़ती हैं तो अच्छी बात है अगर लोग जुड़ते हैं या अलग होते हैं टूटते हैं, टुकड़े होते हैं तो वो बुरी बात है बच्चे भी समझ लें बड़े बुजुर्ग भी समझें । क्योंकि हिन्दुस्तान के लिए मैं आपसे कहता हूं सब में अव्वल बात यह है इस वक्त है मिलना आपस में डिसिप्लिन दिलों के ऊपर पैरों का डिसिप्लिन नहीं दिलों का डिसिप्लिन, दिमाग का डिसिप्लिन एकता दिमागी और मानसिक एकता । यह सबमें बड़ी सवाल और जो उसके रास्ते में आती हैं और वे गलत हैं चाहे मजहब का जामा पहने चाहे कोई और पोशाक पहन के आये, उसको आप याद रखें, याद रखें । याद रखें यहां बहुत सारे बच्चे बैठे हैं, ये बच्चे क्या हैं? ये बच्चे कल का हिन्दुस्तान हैं । कल का भारत

हैं जिसके लिए हम आज काम कर रहे हैं वो ये लोग हैं वो बड़े के यह भारत होगें, यह भारत होगें, जैसा कि आजकल आप और हम हैं । तो उनके लिए दुनियां बनानी है और उनको समझनाहै कैसी शानदार दुनियां में और कैसे शानदार भारत में वो पैदा हुये है, कैसे उनकी मेहनत से और हमारी मेहनत से हम इसको और अच्छाबनाये और जो हममें पुरानी खूबियां हैं उसमें रखें, याद रखें, फिर से लायें और नयी खूबियां लाये और नयी जो दुनियां है साइंस की, विज्ञान की इस पर हावी होकर काबू में लाये और जो अन्दरूनी हमारी आपस की चीजें अलग करती है । जो भी कुछ हो उनको हम हटायें और मिल कर एक बड़ा परिवार हो के आगे बढ़े । तो आजका दिन आज की चौदवीं सालगिरह आपको और हमको मुबारिक हो । एक खास विचार कर लें उसकी तरफ आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं कि हमारे राष्ट्रपति जी कुछ दिनों से तबियत अच्छी नहीं रही है बिमार हैं कुछ पहले से अच्छे हैं लेकिन फिर भी बीमार है तो उनकी तरफ ध्यान जाता है, और हम सब लोग आप और हम और देशभर आशाकरते हैं कि वोजल्दी अच्छे हो जायेगें और जो कि महान सेवा उम्र भर उन्होंने अपने देश की है, उसको बहुत दिन तक जारी रखेंगे ।

जयहिन्द ।

अब जरा मेरा साथ मिल के जयहिन्द तीन बार कहिए आप (जनता पंडित जी के साथ तीन बार जयहिन्द कहती है)